आदिकाल की पृष्ठभूमि :-

धार्मिक परिस्थितियां → इस समय वैदिक व पौराणिक धर्म के साथ बौद्ध-धर्म व जैन धर्म भी अपने वास्तविक आदर्शों से दूर हटते जा रहे थे। अतः धर्म में ब्राह्याडम्बरों का ही समावेश अधिक मात्रा में हो रहा था। शंकराचार्य (सं० 845-877वि) के प्रबल प्रहारों से बौद्ध धर्म को अत्यधिक आघात पहुँचा और वह अब जंत्र, मंत्र-तंत्र की सिद्धियों के चक्र में पड़कर रह गया था। उसने महायान, वज्रयान, सहजयान व मन्त्रायण आदि कई रूप धारण किये।

गुप्त क्रियाओं विशेषकर निम्नवर्ग की नारियों भोग आदि को अपनाने से विलास भावना को प्रधानता प्राप्त हुई साथ ही इन सम्प्रदायों की योगिनियों द्वारा मनुष्यों की कामुकता को अत्यधिक प्रोत्साहन प्राप्त हुई। देश का नैतिक स्तर गिरने लगा। धर्म के नाम पर अधर्म बढ़ने लगा।

बौद्ध धर्म की भाँति वैष्णवों में भी ब्राह्याचारों को प्रधानता मिलने लगी। अनुकरण का सिद्धांत जारी रहा। निम्न वर्ग के साथ साथ मध्य और उच्च वर्ग भी प्रभावित हुआ। अतः उक्त वामाचारियों के चुंगुल से समाज बचाने के प्रयास असफल ही रहे। अन्तोगत्वा आगे चलकर गोरखनाथ ने योग-साधना की प्रतिस्थापना की, जिसमें संयम व आचार के लिए महत्वपूर्ण स्थान है।

निष्कर्ष → इतना सत्य ही थी कि इस समय भक्ति की धारा की धारा दक्षिण में विकसित हो रही थी। कालान्तर में शंकराचार्य, रामानुजाचार्य व निम्बार्काचार्य आदि ने अपनी विचारधारा से प्रभावित किये थे। अपभ्रंश में लिखित "चौरासी सिद्धों और नाथपंथियों का साहित्य बौद्ध धर्म के विकृत सम्प्रदायों की क्रियाओं और प्रतिक्रियाओं का परिणाम है। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि तात्कालीन धार्मिक वातावरण शनैः-शनैः दूषित होता जा रहा था और पुरोहितों व गुह्य भावना को प्रधानता मिल रही थी। धार्मिक स्थिति राजनीति स्थिति की अपेक्षा कुछ ठीक थी।

Scanned with CamScanner

सामाजिक परिस्थितियां — जिस समय धर्म व राजनीति की दीनहीन दशा हो वहां उच्च सामाजिकता की आशा नहीं किया जा सकता है। अब जाति, गुण, व कर्म के आधार पर न होकर वर्ण के आधार पर स्वीकार की जा (सकती) रही थी प्रत्येक जाति की उपजातियां भी हो गयी थी। साथ ही छुआछूत के नियम भी कड़े हो जा रहे थे। विदेश यात्री "अलबेरुनी" के शब्दों में — " उन्हें इस बात की इच्छा होती कि जो वस्तु एक बार भ्रम हो गयी है उसे शुद्ध कर पुनः अपना ले।"

इस प्रकार हिन्दूओं के भावनाएं रुढ़िग्रस्त होने के कारण समाज रुढ़िग्रस्त हो जा रहा था आपस में द्वेषता बढ़ती जा रही थी। इस समय राजपूतों की वीरता और आत्मोत्सर्ग की उल्लेख विद्यमान थी। साथ ही राजपूत नारी भी इस दिशा में पीछे नहीं रही। इस समय स्वयंवर प्रथा का भी विशेष महत्त्व था। और इसके कारण राजपूतों की धरती में खून की नदियां भी बह जाती थी। राजपूत दृढ़प्रतिज्ञ स्वाभिमानी एवं ईमानदारी थे, कूटनीतिज्ञ न थे। युद्ध के साथ-साथ भोग-विलास की भावना भी प्रबल थी। सर्वसामान्य जनता में मनोबल की कमी थी।

निष्कर्ष → उपर्युक्त बातों को देखते हुए हम कह सकते है कि आदिकाल में सामाजिक स्थितियां अच्छी न थी। राजपूतों का चलती था। मध्यम और निम्नवर्ग को देखने वाला कोई नहीं था। भोग-विलास राजाओं द्वारा जारी रहती थी। राजा बहुपत्नि थे। लोगों के आंखों पर वासना, स्वार्थ एवं रुढ़ि का चश्मा लगा हुआ था। यह स्थिति दयनीय थी।

कमलकुमार
6-3-2020